

6127. 8150. 3, 2613. 6003. मुच्यतु नरकात् MĀRK. P. 13, 76. तस्मान्मुक्ता वयं दाह्यात् MBH. 1, 5918. शापान्मुक्तः 3, 2386. ÇĀK. 111, 7. यदि धर्मान् मुच्यते wenn er nicht der Tugend verlustig geht Spr. 2988. Statt des abl. der instr.: मुच्यते पातकैः सर्वैः M. 11, 238. fg. Spr. 3223. 4788. fg. KATHĀS. 49, 228. स शस्त्रवर्मणामोचि चित्तं वैर्षेण नो पुरः RĀGA-TAR. 3, 406. MĀRK. P. 79, 13. वामशास्याः (ऊरुः) करुरुद्वैर्मुच्यमानो मदीयैः frei von MEGH. 94. मुच्यन्ति बन्धनैः MBH. 13, 1079. स मुच्यत्सर्वकिल्बिषैः 1864. मुक्ता ऽहं सर्वकिल्बिषैः 3, 4040. मुक्तमिदं तमसा मनः ÇĀK. 135. RAGH. 4, 15. क्लेशादिभिः Schol. zu KAP. 1, 94. (गुणैः) एतैर्मुक्ता महीपालः ermangelnd Spr. 3125. Statt des abl. der gen.: नहि मे मोहयते जीवन् er wird mir nicht lebend entrinnen MBH. 3, 15757. 16048. नहि ते मुच्ये-दत्तेको ऽप्याततापिनः 1695. मुक्त am Ende eines comp. befreit von, ermangelnd P. 2, 1, 38. योनिं ÇVETĀÇV. Up. 1, 7. धनमुक्ता इवाङ्गुरात् R. 5, 76, 20. विवेकं Spr. 2726. क्लङ्कं 3882. वधं KATHĀS. 28, 150. रोगं 29, 173. रोधं (प्रवक्ष्या) VID. 236. काठिन्यं (ऊरुम्) ÇĀK. 38. उभयोर्द्वै-स्तयोर्मुक्तं पदन्नमुपनोयेत so v. a. eine Speise, die man nicht mit beiden Händen hält, M. 3, 225. pass. ohne nähere Bestimmung befreit —, er- löst werden von der Sünde, von den Banden der Welt: राज्ञा भवत्यने-नास्तु मुच्यते च सभासदः sind von aller Sünde frei M. 8, 19. त्रिपिता पौ-रुषं मुक्तं मुच्यते गुरुतल्पगः 11, 251. यदङ्गा कुरुते पापम् — संध्यो मुच्य-ति पाश्चाम् MBH. 1, 656. तस्मान् बध्यते नापि मुच्यते नापि संसरति पु-रुषः । संसरति बध्यते मुच्यते च नानाश्रया प्रकृतिः ॥ SĀMĀHJAK. 62. मुक्त erlöst von der Sünde, von den Banden der Welt TRIK. 3, 3, 177. M. 6, 44. अभिपूजितलभिश्च यतिर्मुक्ता ऽपि बध्यते 58. BHAG. 3, 28. WEBER, RĀMAT. Up. 338. 343. 357. 359. Spr. 3350 (zugleich Perle); vgl. जीवन्मुक्त (auch PĀNĀK. 1, 10, 83). verlassen (einen Platz): न मुञ्चति च तं देशं नायको यत्र दृश्यते SĀH. D. 60, 4. ad ÇĀK. 78. Spr. 2216. तलं यस्य न मुञ्चति । अत्यन्तशीतलच्छाया स च्छायातलरुच्यते Cit. beim Schol. zu ÇĀK. 86. प-लितशारशिलापटबन्धस्पृष्टमुक्तभूमि adj. DAÇAK. in BENF. CHR. 180, 1. मुञ्च शय्याम् RAGH. 3, 66. इद्वैव प्रियापरिभक्तमुक्ते लतावलये ÇĀK. 41, 17. मु-क्तासन 63, 16. RAGH. 3, 11. मुक्तरोधोनिताम्ब MEGH. 42. तत्तर्णं सूर्यमुक्ता दिक् TRIK. 1, 1, 95. मुक्ता (दिष्) verlassen heisst in der Auguralkunde diejenige Weltgegend, welche die Sonne so eben verlassen hat; steht z. B. die Sonne im Süden, so heisst der Süden प्रातार्का und Südost मुक्ता, VARĀH. BRH. S. 86, 12. Jmd oder Etwas fahren lassen, im Stich lassen, aufgeben, abschütteln: कदाचित्तं न मुञ्चति — सेवकाः Spr. 634. तमेव व्रज मा मुचः BHATT. 4, 29. मुक्ता हरिकुरादीन् KATHĀS. 72, 327. NALOD. 3, 12. Spr. 1443, v. l. 2614. 2899. ÇĀK. 115, v. l. कनात्तरान्मात्रां न मु-ञ्चति PĀNĀK. 34, 13. 32, 25. मुक्ताग्निम् JĀGĀN. 2, 107. आसेवितं वर्षपूगा-न्षड्गुर्गं विपमेषु सः । लपोन मुपुचे नीड ज्ञातपत इव द्विजः BHĀG. P. 9, 19, 24. चित्तौ परिष्वद्य विचेतनं पतितं प्रिया हि या मुञ्चति देहमात्मनः Spr. 911. R. 1, 23, 14. मुञ्चेत्प्राणान्भयादियम् VID. 121. UTTARARĀMAK. 20, 10. PĀNĀK. 37, 17. धनानि Spr. 1991. पथ्यमन्नम् 4497. सौहार्दम् 3349. स्व-चापैतौर्द्वयमदम् (कामः) KUMĀRAS. 1, 48. भोगम् VID. 308. भक्षणम् KATHĀS. 22, 229. तच्छिताम् 34, 29. विलम्बम् GĪ. 11, 5. राज्ञो मौनमुञ्चतः KATHĀS. 69, 79. 162. NAIŠH. 22, 53. BHATT. 6, 24. तेन हि मुच्यतो विषादः VIKR. 3, 16. त्वया तु — क्रोधो ऽप्यापि न मुच्यते KATHĀS. 33, 50. HIT. 37, 20, v. l. मोहयते शोकसं दुःखं निर्मोकाभिव पन्नगी R. 6, 9, 36. कदाचिन्मुञ्चेयं मदन-

शिलिपीडापरिभत्रम् Spr. 2840. दुःखं मोहये कदाहम् 3313. BHATT. 6, 62. मुक्तशेषविरोध adj. RAGH. 10, 13. मुक्तनिद्रं so v. a. erwacht KATHĀS. 10, 72. मुक्तमानकलह adj. 33, 141. मुक्तव्यापद् adj. HIT. 44, 6. मुक्ताद् so v. a. von der Wassersucht befreit BHĀG. P. 9, 7, 20. कथमपि देववशादमु-क्तजीवितः PĀNĀK. 174, 25. भीर्मुञ्चेत — त्वाम् NALOD. 4, 7. तदपि न मुञ्च-त्याशावापुः (sc. नः) Spr. 4481. मुक्तनारुता (गुहा) so v. a. frei von Wind R. 4, 23, 14. fahren lassen so v. a. hingeben, verleihen: मुञ्चति सत्पला-नि RĀGA-TAR. 3, 232. verlassen, aufgeben so v. a. bei Seite lassen; मुक्ता mit Ausnahme von (acc.), ausser Spr. 664. 976. v. l. 1549. वायुं मुक्ता नान्यस्य प्रवेशो ऽस्ति PĀNĀK. 44, 41. पुङ्गं मुक्ता मे नान्यदस्ति श्रेयस्करम् 73, 19. 86, 19 (wo त्वो मुं zu lesen ist). Etwas fahren lassen so v. a. aus sich entlassen, von sich geben; werfen, schleudern, abschiessen: तावद्भौः पृथिवी ज्ञेया यावद्भ्रं न मुञ्चति JĀGĀN. 1, 207. RĀGA-TAR. 4, 129. मुखेन ग-रुलं मुञ्चन् (फणी) Spr. 2210. लीढमुक्ताः KIR. 3, 38. चिरसंनियतं वाप्यं मुमोचाग्निमिवारुणिः R. 2, 30, 23. मुमोच वाप्यं शनकैः MBH. 1, 6180. अश्रू-णि मुमुचे 8447. HARIV. 7081. R. 2, 37, 15. MEGH. 12. KATHĀS. 10, 178. 32. 162. DAÇAK. in BENF. CHR. 183, 10. श्लेष्माश्रु बान्धवैर्मुक्तम् Spr. 3036. मु-मुचे भूरि रक्तम् MBH. 3, 7215. शकृन्मूत्रं च मुञ्चानाः 3, 11115. अष्टम् श्लेष्म पुरीषं च मूत्रं च मुञ्चताम् 7, 2597. नागाः शिरोभिर्जलसंततम् । मुमुचुः 1, 8154. KATHĀS. 19, 97. सकृत्पीडितं वस्त्रं मुञ्चेद्भूतं पयः Spr. 2220. अमलं पयः — मुमुचुर्भिववहनाः BHATT. 7, 2. विद्युच्छटो दृष्टिभिर्मुञ्चतोम् PRAB. 63, 11. गन्धं मुञ्चति मेदिनी HARIV. 7062. 4383. मुञ्चत्सु निःश्यासानपि म-न्त्रिषु KATHĀS. 72, 168. PĀNĀK. ed. opr. 30, 4. हा कृति सकृत्सामुक्तः शब्दः MBH. 3, 2219. मयूराश्च वाचो मुञ्चति दारुणाः 6, 62. त्वं (मेघं) मुक्तधनिम् MEGH. 33. पात्कारं मुक्तवान् VID. 86. 96. 336. KATHĀS. 18, 154. 23, 110. सिंहेनादं मुमोच PĀNĀK. 37, 14. BHATT. 7, 57. मुक्ता हासम् ein Gelächter erhebend R. GORR. 1, 33, 15. मुमुचुः खडूपान् so v. a. aufsteigen lassen BHATT. 3, 5. वर्षोदकैः काञ्चनशृङ्गमुक्तैः geschleudert RAGH. 16, 70. मुञ्चतः पुष्पवन्दम् — चूतवृत्तान् R. 6, 28. दत्तेन पुष्पं मुञ्चत्या तथा KATHĀS. 7, 68. MEGH. 83. देवाश्च पुष्पवर्षं च मुमुचुश्च समन्ततः MĀRK. P. 66, 27. RAGH. 2, 60. 12, 94. बाणामयं वर्षम् — मुमाच — यथा वर्षं सकृन्नदत्त्वं MBH. 3, 670. बाणा मुक्ताः शिलास्त्विव MBH. 1, 7667. बाणान् — मुमाच तनये मम 3, 763. 4, 2065. 3, 7354. KATHĀS. 47, 81. सा नीलोत्पलमयमिवापाङ्गदामाङ्गे मम मुञ्चती DAÇAK. in BENF. CHR. 184, 21. गन्धर्वाय मुमोच ह । प्रदीप्तमन्त्रमा-ग्नेयम् MBH. 1, 6466. 3, 7236. वज्रं मोहयते ते (auf dich) महेन्द्रः 14, 263. R. 1, 76, 6. स तामत्रिभ्रमद्भोगी (शक्तिं) वानरेन्द्रस्य चामुचत् BHATT. 13, 33. मुमोच वज्रम् — त्रिशिरसं प्रति MBH. 3, 251. 14, 844. चक्रं मुमोच 1, 1179. 3296. 3, 14609. 3, 7191. 7288. 6, 2537. R. 1, 54, 23. 53, 21. 3, 30, 18. Spr. 319. 2579. 3168. KATHĀS. 67, 39. बालेन — मुक्तं रौप्यं लसट्टिम्बम् NAIŠH. 22, 53. मधवन्मुक्तकुलिशप्रहार Spr. 2744. पादप्रहारस्तथा मुक्तः einen Fussstoss versetzen PĀNĀK. 233, 1. चतुर्विधं तच्च (अस्त्रम्) । मुक्तामुक्तम-मुक्तं करमुक्तं यत्नमुक्तं च ॥ शस्त्रादि पाणिमुक्तं स्यादमुक्तं नुरिकादिकम् । मुक्तामुक्तं तु यष्ट्यादि यत्नमुक्तं शरादिकम् ॥ HALĀ. 2, 307. fg. H. 774. MADHUS. in Ind. St. 1, 21. आत्मानं मुच् sich stürzen von (abl.): आकाशा-दात्मानं मुक्तवान् R. 4, 60, 19. स मरुकूटादात्मानं मुमोच MBH. 1, 6740. गिरिवर्तटांमुक्ताश्चात्मा Spr. 2741. मुक्त abgelöst, herabgefallen: तृणा-राजफलानीव मुक्तानि शिखरात्तैः HARIV. 8093. Vgl. अमुक्त.

— caus. मोचयति (auch med.) 1) = simpl. losmachen, freimachen,